परामर्शी नैतिक भाषा का विश्लेषणात्मक अध्ययन: (आर. एम. हेयर, पी. एच. नॉवेल-स्मिथ, शबरस्वामी तथा लौगाक्षि भास्कर के विशेष संदर्भ में)

दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय) रांची विश्वविद्यालय में पीएच. डी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव

2023

शोध निर्देशिका

डॉ. रंजू कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
दर्शनशास्त्र विभाग
निर्मला कॉलेज
रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोधार्थी

आरती उपाध्याय
UGC NET
दर्शनशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोध शीर्षक

परामर्शी नैतिक भाषा के अर्थपूर्णता का समीक्षात्मक अध्ययन: (आर. एम. हेयर, पी. एच. नॉवेल-स्मिथ, शबरस्वामी तथा लौगाक्षि भास्कर के विशेष संदर्भ में)

विषय प्रवेश:

मनुष्य एक विलक्षण बौद्धिक चिंतनशील और तार्किक प्राणी है। वह अपने तथा दूसरों के भाषा प्रयोग से प्रभावित है। अर्थात् सभी बौद्धिक प्राणी अपने विचारों को संचारित करने हेतु भाषा का प्रयोग करते हैं जो वाणी द्वारा यह लिखित रूप में प्रयुक्त होता है। चाहे भाषा हिंदी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि क्यों ना हो भावों का विनिमय करना अर्थात् विचारों को अभिव्यक्त करना उन भाषाओं का कार्य है। यह तब तक संभव नहीं होता है जब तक ना कि भाषा बोधगम्य या अर्थपूर्ण हो एवं वक्ता और श्रोता कि कहीं गयी बातों की सत्यता में आस्था रखता हों और आवश्यकता पड़ने पर उसे सिद्ध भी कर सकता हो। यही बात नैतिक भाषा के लिए भी प्रयोज्य है। यानी नैतिक भाषा व्यक्ति के लिए नैतिक मूल्य संबंधी भावों को अभिव्यक्त करने वाली या संचारित करने वाली भाषा है। नैतिक भाषा ग्रीक और घेबरू भाषा की तरह या गणित की भाषा की तरह कोई अनोखी भिन्न कोटि की भाषा नहीं है, वह हमारे साधारण बोल-चाल की ही भाषा है जिसका व्याकरण अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग होता है। किंतु नैतिक भाषा बोधगम्य हो और सत्य हो यह अपेक्षित है। यही कारण है कि नीतिशास्त्र की आधिनैतिक विधा में नैतिक भाषा के अर्थपूर्णता और सत्यता की गहन पड़ताल की जाती है। वास्तव में नैतिक भाषा का तात्पर्य हमारे साधारण भाषा का प्रयोग करके नैतिक मूल्यों के विषय में कुछ बातों को अभिव्यक्त करना है। सामान्यत: नैतिक भाषा में हमारे ऐच्छिक कर्मों के नैतिक मूल्य व्यक्त होते हैं, उसके अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित, दायित्व, कर्तव्य आदि मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है। इसके अलावे नैतिक भाषा द्वारा हम सदगुणों-दुर्गुणों के

विषय में अपने भाव प्रकट करते हैं तथा व्यवहारिक विषयों में मूल्यों के प्रश्न उठाते हैं, उन विषयों पर अपने विचार प्रकट करते हैं।

इस शोध-कार्य के शीर्षक में इस कारण यह स्पष्ट किया गया है कि इसकी सीमा नैतिक भाषा की अर्थपूर्णता और सत्यता संबंधी अधिनैतिक विवेचना करना है। अतएव प्रस्तावित शोध कार्य की वृहद् पृष्ठभूमि अधिनीतिशास्त्र है।

अधिनीतिशास्त्र में भाषा विचार मुख्यत: दो सिद्धांत के आलोक में होता है- संज्ञानवाद और असंज्ञानवाद। प्रथम सिद्धांत के अनुसार नैतिक भाषा सत्य और सार्थक है क्योंकि उसमें कहीं गइ बातों का साक्षात् ज्ञान हमें हो जाता है। फलत: नैतिक भाषा बोधगम्य है जबकि असंज्ञानवादी सिद्धांत यह मानता है कि वक्ता नैतिक भाषा द्वारा किसी वस्तु या विषय का वर्णन नहीं करता है, उसका साक्षात् ज्ञान हमें इंद्रियों, अनुमान, अन्तर्ज्ञान द्वारा नहीं होता है। अतः वर्णन और साक्षात् सत्यता-स्थापना पर हमें यह देखना चाहिए कि नैतिक भाषा के प्रयोगकर्ता उस भाषा के द्वारा क्या कर रहे हैं। कुछ चिंतकों का कहना है कि नैतिक भाषा सत्य और अर्थपूर्ण है क्योंकि उसके द्वारा हम अपने मन के भावो को व्यक्त करते हैं, जो नैतिक विषयों से संबंधित होता है जबकि परामर्शवाद का सिद्धांत मानता है कि नैतिक भाषा परामर्शी अर्थात् उस भाषा के प्रयोग द्वारा वक्ता श्रोता को कुछ नैतिक कार्य करने को या ना करने को प्रेरित करता है या उन्हें आदेश देता है या परामर्श देता है।

नैतिक भाषा को यह चिंतक नैतिक जीवन जीने का परामर्श भाषा कहते हैं। प्रस्तावित शोध कार्य में इस कारण हमने नैतिक भाषा के अर्थपूर्णता के विपुल भंडार से मात्र परामर्शी भाषा के स्वरूप सत्यता एवं अर्थपूर्णता की विवेचना करने का ध्येय रखा है। ध्यातव्य है कि परामर्शी नैतिक भाषा के अर्थपूर्णता की विवेचना पाश्चात्य और भारतीय मनीषा में भी हुई है। इस संदर्भ में आर. एम. हेयर, पी. एच. नॉवेल-स्मिथ पाश्चात्य दर्शन में तथा भारतीय दर्शन में शबरस्वामी एवं लौगाक्षि भास्कर का विशेष स्थान है। इन बातों को ध्यान में रखकर अपने प्रस्तावित शोध कार्य का शीर्षक

परामर्शी नैतिक भाषा का विश्लेषणात्मक अध्ययन आर. एम. हेयर, पी. एच. नॉवेल-स्मिथ, शबरस्वामी तथा लौगाक्षि भास्कर के विशेष संदर्भ में रखा है।

नैतिक भाषा के अनेक सिद्धांतों में असंज्ञानवादी सिद्धांत के अंतर्गत परामर्शवाद आता है। परामर्शवाद पाश्चात्य समकालीन दर्शन का नवीनतम सिद्धांत है, जो हेयर द्वारा प्रतिपादित किया गया है। हेयर ने अपनी **'पुस्तक लैंग्वेज ऑफ मोरल'** में कहा है कि नैतिक भाषा परामर्शात्मक भाषा का ही एक रूप है, जिसमें सार्वलौकिकता और बौद्धिकता होती है इसका मूल उद्देश्य हमारे इस प्रश्न का उत्तर देना है कि हमें क्या करना चाहिए। हेयर का यह मत उपयोग सिद्धांत पर आधारित है। हेयर के समान नॉवेल-स्मिथ ने भी अपनी पुस्तक **'एथिक्स'** में कहा है कि नैतिक भाषा का प्रयोग हम दूसरों को परामर्श देने के लिए ही करते हैं नैतिक भाषा तथ्यात्मक वर्णनात्मक भाषा से भिन्न प्रकार की होती है। इसका मूल उद्देश्य किन्हीं तथ्यों का वर्णन ना करके आचरण के संबंध में मनुष्य का मार्गदर्शन करना है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में मैने शबरस्वामी जो कि मीमांसा दर्शन के प्रमुख चिंतक हैं, उन्होंने अपने भाष्य में आदेश के भाषीय रूप की प्रस्तुत करने वाले या इसे व्यक्त करने वाले भाषीय रूप की व्याख्या करते है जिसे उनके श्लोकों में देखा जा सकता है। उनके भाष्य में यह बताया गया है कि मूल क् या होना ही एक विधि आदेश का संकेत देता है। यदि इनका अंग्रेजी रूपांतरण देखा जाए तो विधि के रूप का अंग्रेजी में रूपांतरण होने पर यह देखा जा सकता है कि "एक व्यक्ति कुछ करेगा," यह किया जाना चाहिए, ऐसा होना चाहिए यह सारे वक्तव्य एक विधि या आदेश का संकेत देते है। नव्य-नैयायिक लौगाक्षि भास्कर की मूल मान्यता मीमांसा दर्शन पर आधारित है। मीमांसा दर्शन सम्पूर्ण वेद को पाँच भागों में विभक्त करता है। विधि, मंत्र, नामधेय, निषेध और अर्थवाद इसका विशद् विवेचना लौगाक्षि भास्कर ने अपने अर्थसंग्रह में किया है। इन्हें मैंने अपने शोध कार्य में परामर्शी नैतिक भाषा के स्वरूप, अर्थ व सत्यता की विवेचना हेतु चयन किया है।

शोध का विषय:

प्रस्तावित गवेषणा कार्य का विषय प्रमुख पाश्चात्य एवं भारतीय चिंतकों के द्वारा की गई नैतिक भाषा के अर्थपूर्णता की व्याख्या और समीक्षा करना है। इन प्रमुख चिंतकों में सामान्य बात यह है की ये चिंतक नैतिक भाषा में निहित आदेश/परामर्श देने के कार्य को ध्यान में रखकर उस भाषा के अर्थपूर्णता की तार्किक विश्लेषण और समीक्षा करते हैं। इस गवेषणा-कार्य के विषय की व्याप्ति है नैतिक भाषा के स्वरूप एवं कार्य सम्बन्धी सिद्धांतों पर विहंगम दृष्टि डालते हुए मुख्यत: नैतिक भाषा के आदेश/परामर्श देने के कार्य पर गहन विचार करना और उसके आधार पर नैतिक भाषा के अर्थपूर्णता की विवेचना करना। इस गवेषणा-कार्य की परिसीमा को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त विषय-वस्तु एवं विषय की व्याप्ति की दृष्टि से पाश्चात्य दार्शनिक आर. एम. हेयर तथा पी. एच. नॉवेल-स्मिथ एवं भारतीय दार्शनिक शबरस्वामी तथा लौगाक्षि भास्कर के परामर्शी नैतिक भाषा की समीक्षा की जाएगी।

अनुसंधान की समस्या:

प्रस्तावित अनुसंधान की समस्या है आर. एम. हेयर तथा पी. एच. नॉवेल-स्मिथ मीमांसक शबरस्वामी और नव्य-नैयायिक लौगाक्षि भास्कर ने जिन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है उसमें नैतिक भाषा के परामर्शीय कार्य का प्रतिपादन और समीक्षा कर पाश्चात्य और भारतीय दोनों में भाषा के विषद् विवेचना में परामर्शवाद के विशेषताओं और उसकी त्रुटियों को दिखाना हमारा उद्देश्य एवं हमारा श्रेय है।

अनुसंधान का विषय एवं मुख्य बिन्दुः

प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य है नैतिक भाषा के आदेश/परामर्श को पाश्चात्य और भारतीय परिप्रेक्ष्य से समझना जो निम्नलिखित है –

- नैतिक भाषा का स्वरूप क्या हैं?
- नैतिक भाषा के प्रमुख कार्य क्या हैं?
- नैतिक भाषा का आदेश/परामर्श देने का कार्य क्या हैं?
- पाश्चात्य नीतिदर्शन में नैतिक भाषा के परामर्शी कार्य की दृष्टि से अर्थ-विचार मुख्य रूप से कौन करते हैं?
- पाश्चात्य विचारक आर. एम. हेयर नैतिक भाषा के परामर्शी कार्य के विषय में क्या विचार रखते हैं?
- पाश्चात्य विचारक पी. एच. नोवेल स्मिथ नैतिक भाषा के परामर्शी कार्य के विषय में क्या विचार रखते हैं?
- भारतीय चिन्तक शबरस्वामी नैतिक भाषा के आदेश/परामर्श देने के कार्य के विषय में क्या विचार रखते हैं?
- भारतीय चिंतक लौगाक्षि भास्कर नैतिक भाषा के आदेश/परामर्श देने के कार्य के विषय में क्या विचार रखते हैं?
- उक्त चिंतकों की नैतिक भाषा के आदेश/परामर्श देने सम्बन्धी कार्य की दृष्टि से उस भाषा के अर्थ विवेचना में क्या समानताएँ एवं असमानताएँ परिलक्षित होती हैं?

परिकल्पना:

जिस विषय में मैं शोध करने जा रही हूं उसके भविष्यगामी प्रभाव का कुछ अनुमान परिकल्पना के द्वारा किया जाता है। परिकल्पना है कि अधिनैतिक सिद्धांत के रूप में परामर्शवाद अत्यंत प्रभावशाली सिद्धांत होते हुए भी वह नैतिक भाषा के प्रयोग का एक पक्षीय सिद्धांत है। इसकी समीक्षा आगे के अध्यायों में की जाएगी।

अनुसंधान का प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति:

गवेषणा मुख्य रूप से आर. एम. हेयर तथा पी. एच. नॉवेल-स्मिथ मीमांसक शबरस्वामी और लौगाक्षि भास्कर के मूल लेखन, पुस्तकों पर निर्भर करता है। प्रस्तावित अनुसंधान कार्य भाषा से संबंधित है। इसलिए इसकी विधि भाषा विश्लेषण की विधि है। यह विधि सैद्धांतिक विधि है जिसमें हम दार्शनिक विचारों और सैद्धांतिक संरचनाओं का उपयोग करके शोध वस्तु की जांच करते हैं। यह विधि आलोचनात्मक विधि है, जिसके अंतर्गत हम पूर्व स्थापित सिद्धांतों का विश्लेषण एवं आलोचना करते हैं ताकि सिद्धांतों को सत्य की कसौटी पर उतारा जा सके। इस प्रकार प्रस्तावित अनुसंधान कार्य की विधि मूलत: सैद्धांतिक, समीक्षात्मक, आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि है। जो भारतीय दर्शन की आन्वीक्षिकी की विधि में प्रकट होता है।

अनुसंधान संबंधी तथ्य संकलन:

अनुसंधान संबंधी तथ्य संकलन के लिए शोधकर्ता मुख्य रूप से प्राथमिक और द्वितीय स्रोत पर निर्भर करता है । विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण किया जाएगा और उन पुस्तकालयों में उपलब्ध आर. एम. हेयर तथा पी. एच. नॉवेल-स्मिथ, शबरस्वामी और लौगाक्षि भास्कर से संबंधित मूल एवं

सहायक ग्रन्थों का अध्ययन कर सामग्री एकत्रित की जाएगी। कुछ राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तरीय पत्र पत्रिकाओं जैसे दार्शनिक त्रैमासिक, दार्शनिकी, दार्शनिक अनुगूंज, जेस्टोर, स्कोपस, डेलनेट, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी, ई.कंटेंट, शोधगंगा आदि की सहायता से विषय से संबंधित प्रमुख चिंतकों एवं विद्वानों के विचारों का अध्ययन किया जाएगा तथा उनके लेखों और शोध प्रबंधों की सहायता ली जाएगी।

अनुसंधान संबंधी तथ्य का विश्लेषण:

तथ्य का विश्लेषण की प्रक्रिया के लिए शोधकर्ता द्वारा तथ्य का विश्लेषण की तीन प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाएगा। पहला: विभिन्न स्रोतों से तथ्यों का संगठन और मूल्यांकन किया जाएगा, दूसरा: सारांशीकरण और वर्गीकरण किया जाएगा एवं तीसरी और अंतिम प्रक्रिया में तथ्य का विश्लेषण किया जाएगा।

वर्तमान में महत्व एवं प्रासंगिकता:

मेरे शोध कार्य का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक महत्व है। इस शोध कार्य के द्वारा भविष्य में इस विषय पर उत्तरकालीन शोध करने वाले शोधार्थियों को मार्गदर्शन मिल सकेगा उसकी संभावना है। मेरे शोध कार्य का महत्व इस बात में भी है कि सामान्यत: हमें नैतिक भाषा संबंधी सिद्धांत विवेचन भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में देखने को नहीं मिलता इसलिए यह कार्य शोधार्थियों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में नैतिक भाषा को समझने में मददगार साबित हो सकेगा।

वर्तमान ज्ञान में अनुसंधान विषय का ज्ञान:

वर्तमान में अधिनीतिशास्त्र का ज्ञान जो हमारे पास है, उसमें आर. एम. हेयर तथा पी. एच. नॉवेल-स्मिथ आदि के विचारों को हम जानते हैं कि असंज्ञानवाद में नैतिक भाषा के परामर्शवाद का क्या विचार है, लेकिन मैंने यह अभी तक एक स्थल पर नहीं देखा है कि भारतीय दार्शनिक इस विषय पर क्या विचार रखते है। उनके साथ पाश्चात्य विचारकों की तुलना कैसे की जा सकती है यह मैंने एक स्थल पर नहीं देखा है। उसको इस शोध कार्य में एक स्थल पर लाकर देखना, यही वर्तमान में मेरे शोध कार्य का योगदान होगा।

भविष्य में कार्य होने की संभावना:

समकालीन संज्ञानवादी और असंज्ञानवादी जो चिंतक है उसमें उत्तर असंज्ञानवादी विचारक जो हेयर की आलोचना और समालोचना करते हैं उसकी तुलना करके देखना कि कौन सा विचार अधिक मान्य है। भविष्य में इस विषय पर कार्य होने की अत्यधिक संभावना है।

संभावित अध्याय

भूमिका

प्रथम अध्याय: नैतिक भाषा का अर्थ एवं स्वरूप का विश्लेषण

द्वितीय अध्याय: आर. एम. हेयर का नैतिक भाषा सम्बन्धी परामर्शवादी विचार

तृतीय अध्याय: पी. एच. नॉवेल-स्मिथ के नैतिक भाषा सम्बन्धी परामर्शवादी विचार

चतुर्थ अध्याय: शबरस्वामी के नैतिक भाषा सम्बन्धी परामर्शवादी विचार

पंचम अध्याय: लौगाक्षि भास्कर के नैतिक भाषा सम्बन्धी परामर्शवादी विचार

षष्ठ अध्याय: आर. एम. हेयर तथा पी. एच. नॉवेल-स्मिथ, शबरस्वामी तथा लौगाक्षि भास्कर के नैतिक भाषा सम्बन्धी परामर्शी विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन

निष्कर्ष

सहायक ग्रन्थसूची

- Bhatta, Pandit R. G. *Mīmāṁsā Darśana with the commentary of Śabara-svāmin.* Varanasi: vidya Vilas press, 1910.
- Hare, R.M. *The Language of Morals* .Oxford:Clarendon Press, 1952.
- Hare, R.M. *Freedom and Reason.* Oxford: Clarendon Press, 1963.
- Jha, D. *Mīmānsā, Ślokavārttika*. Darbhanga:Kameshwar Singh Sanskrit University, 1979.
- Nowell-Smith, P.H. *Ethics.Harmondsworth*: Pelican Books, 1954.
- Sukhthankar, S.S. Arthasaṁgraha of Laugākṣī Bhāskara.Varanasi: Bharatiya Vidya Prakashan, 1931.
- Shastri, R. Arthasaṁgraha of Shri Laugākṣī Bhāskara. Delhi: Chaukhambha Orientalia, 2022.
- Maitra, S. K. *The Ethics of the Hindus*. Calcutta : University Press, 1963.
- Miller,A. *An Introduction to Contemporary Metaphysics.* Cambridge: Polity Press, 2013.
- Tiwari, D. N. *The Central Problems of Bhartṛhari's Philosophy.* New Delhi: Indian Council of Philosophical Research, 2008.
- Frankena, W. K. *Ethics.* South Asia: Person Education, Inc, 1963.
- Jha, H.M. *Trends of Linguistic Analysis in Indian Philosophy*. Delhi: Chaukhambha Orientalia, 1981.
- Prasad, R. *A Conceptual - Analytic Study of Classical Indian Philosophy of Morals.* New Delhi: Concept Publishing Company, 2008.
- Barlingay, S.S. *A Modern Introduction to Indian Ethics.* Delhi: Penman Publishers, 1998.